स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'- उमेश श्रीवास्तव

(हिंदी साप्ताहिक)

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 40 पृष्ठ 4 वर्ष 24

रविवार, इलाहाबाद, 26 जनवरी 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

पुरस्कृत रचना

महाकुंभ

बारह कुंभों बाद है आया ये महाकुंभ का पर्व
संगम की माटी के कण-कण में छाया है उत्कर्ष
माघ मास की महिमा का, हर ओर प्रभाव है छाया
नर -नारी, साधु -संत संग, किंनर समाज भी आया
एक ही जैसा हर मन में समाया है श्री हर्ष
संगम की------------
भेद -भाव का नाम नहीं है, यहां की माटी में
गंगा -जमुना जैसी संस्कृति , दिखती हर जाति में
एक ही भाव से सभी हैं मिलते जलसा हो या पर्व
संगम की ----------
पुण्य की डुबकी यहां लगाकर, जीवन धन्य बना लो
दान दक्षिणा देकर माघ में, आओ पुण्य कमा लो
भक्ति -भाव की इस महिमा का एक ही है निष्कर्ष
संगम की माटी --------- बारह।।

मिली संजय श्रीवास्तव

रविवार, इलाहाबाद, 26/01/2025

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

पतित पावनी गंगा तट पर ,
महाकुंभ का मेला है ।
सभी भक्तजन यहां पर आते ,
आस्था का यह रेला है ।
मोक्ष प्राप्त करने को आतुर ,
सभी भक्तजन आते हैं ।
संगम में डुबकी लगाकर ,
हर्षित वह हो जाते हैं ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की। वर्ष बीत गया। नया वर्ष आया । सभी जन पुलकित हर्षित है । काव्य यात्रा में कुछ नया करने को, कुछ नया लिखने को और कुछ नए प्रकार की रचनाओं को
लेकर हर रचनाकार हमारे आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। महिला काव्य गोष्ठी में इस बार की रचनाओं की कुछ झलक देखिए -

पहली बनगी

प्रेम एक आग है
तो प्रेम एक जलन भी है।

दूसरी बनगी

हे मानव,
कैसी आलौकिक कृति है तू,
बनाया तुझे सृष्टि के मालिक ने,
क्या सोच कर भेजा तुझे,

तीसरी बानगी

जागो सवेरा हो गया
सूरज लाली से लिपट गया

चौथी बानगी

कैसे आऊँ पास मैं तेरे।
कंकड़ चुभते राह घनेरे।

इस तरह की रचनाओं से सराबोर इस बार महिला काव्य गोष्ठी की रचनाओं को देखिए, पढ़िए और बताइए कि यह अंक आपको कैसा लगा। इस बार की पुरस्कृत रचना **मिली संजय श्रीवास्तव** की है अंक पढ़िए, प्रतिक्रिया जरूर दीजिए ।

अंत में -

सुबह का सुंदर सवेरा आ गया ,
यह कितना लजीज है सुहा गया ।
आओ देखेँ प्रातः की यह लालिमा ,
मन को झगझोरता सा छा गया ।

कविताएं

मेरी दोस्त

मेरी दोस्त मुझे जान से प्यारी है।
इस दुनिया में
हमारी दोस्ती बड़ी न्यारी हैं।
तु अलग जाति और धर्म की है
मैं अलग जाति और धर्म की हूं
तु काली मैं गोरी हूं।
फिर भी मेरी दोस्त
मुझे जान से प्यारी है।
मेरी दोस्ती तूझ से कब हुई
मालुम नहीं।
कब तुम और हम
एक दूसरे के जान बन गये
यें भी तो मालुम नहीं।
ऐ दोस्त तुने मुझे जीना शिखाया
मुश्किल राहों पर चलना सीखाया
तु मेरी रोती हुई चहरे पर मुस्कान ला देती,जब भी मैं उदास होती।
मै क्या कहु ऐ दोस्त तेरी दोस्ती
आज मुझे सब से अनमोल लगती है,तेरी दोस्ती के आगे हर एक दौलत नही कोई कीमत हैं ।
तू यूं ही मेरी दोस्त रहना,ओर मुझसे दोस्ती निभातीं रहना।
मेरी आने वाली मुश्किलों में, चट्टान बन कर खड़े रहना।
मेरी हर मुशिबतो से निकाल लाना।।
ए दोस्त तुझसे मेरी बस एक ही विनती है,तू मुझसे कभी अलग मत हो जाना ।
सदा मेरी जान ही बनकर रहना,
ताकि मैं बार बार कह सकूं।
मेरी दोस्त मुझे जान से प्यारी है।

रूकसाद परवीन अहमद।

क्या हैं यें प्रेम ?

प्रेम एक आग है
तो प्रेम एक जलन भी है।
प्रेम एक फूल है
तो प्रेम एक खुसबू भी है ।
प्रेम एक पुंजा है
तो प्रेम एक तपस्या है।
प्रेम एक भक्ति है
तो प्रेम मे बड़ी शक्ति है ।
प्रेम एक समंदर हैं
तो प्रेम में गहराई भी है।
प्रेम एक जल है
तो प्रेम में शीतलता भी है।

प्रेम एक भाव है
तो प्रेम में अनुभुती भी है।
प्रेम एक राग है
तो प्रेम एक सुर भी है ।
प्रेम एक अहसास है
तो प्रेम एक बलिदान भी है।
प्रेम एक खुदा है
तो प्रेम एक इबादत भी है ।
प्रेम दिलों का मिलन है
तो प्रेम मे त्याग भी है ।
प्रेम पांच कलिमाएं हैं
तो प्रेम एक इमान भी है।

सैयदा आनोवारा खातून
विश्वनाथ चारिआलि(असम)

गुस्ताखियाँ

लोग गुस्ताकियों की बात करते है।
अपने किरदार को
पाक साफ करने की बात करते है।
जिद्दी, अड़ियल कह उनको,
अपनी साफ दामन का
दंभ भरते है;
कि लोग ज्ञान की बात करते हैं।
जीवन को उन्नत,
और आसमा को छूने की
बात कहते है;
कि लोग चांद पर
जीवन की खोज को,
सम्मान की बात कहते है;
कि लोग डॉलर को ,
इंसानियत से तौलते ,
अपनी निरंकुशता का सबूत देते है।
वो सीरिया की धरती पर,
बिखरते नव पल्लव के,
रक्तिम भूमि पर
छिटकते अंगों को देख
सीना फूल आँखों में
आसूं का स्वांग भरते है।
जहां एक कोमल फूल
अब भी मुस्कुरा रहा,
अपनी शाख से बिछड़
जाने कब मां की गोद से गिर
किसी सड़क में ,
अपनी बेमौत मौत से
बेखबर हँस रहा।

ये हँसी उन तमाम
गिरहबख्त जबानो पर तमाचा सा है,
जो धरती की खूबसूरती से रुसवा,
उन तमाम संवेदनहीनों की
गालों पर है,
युद्ध की भूमि से उङ्ग रहे
जलती शवों की अग्नि में
हाथ सेंकते मानवीय चोला पहने
पशुहीन मानव पर है ।

आभा कुमार चौधरी
गुवाहाटी

माँ शब्द

माँ शब्द ममता का ताज है
माँ शब्द मे मान है ।
माँ शब्द शंखनाद है
माँ शब्द सार संसार का है ।
माँ की ममता कहा भटक रही है
माँ का आँचल कहा फिसल रही है
ममता मे स्वार्थ क्यू इतना ।
माँ के दूध मे तड़प क्यू ना अब इतना ।
सिमट लो माँ तू अपनी ममता
फैला दो ममता का मान बस इतना करो आँचल का माँ मान बस इतना
दूर ना जाए ममता की मान बस इतना

उर्मिला ओझा
डिब्रूगढ़ (असम)

माँ - मेरी आत्मा

जिसको दिया जीवन दान,
वो हाल तुम्हारा पूछने ना आया।
कौन चुकाये तुम्हारा एहसान?
माँ तुम्हें कोई समझ ना पाया।
प्रकृति की तुम कैसी रचना? परिस्थितियों से कभी ना हारी हो।
हंसते हुए अश्रु तुमने बहाये
माँ तुम सबसे प्यारी हो।
तुमने पाया श्रेष्ठ वरदान,
कोख में तुम्हारे जीवन समाया।
ना होती तुम, ना होता
इंसान उसका अहंकार
ये स्वीकार न पाया।
तुम भूखी हो सोयी
बच्चों को कभी भूखा ना सुलाया।
जीवन अपना सौप कर
भविष्य इनका तुमने बनाया।
माँ तुम्हें कोई समझ ना पाया।

वृद्धावस्था में हारते शरीर से
चट्टानों को तुमने हराया।
हो कप कपाते हाथ,
खाना जरूर बनाया।
माँ तुम्हें कोई समझ ना पाया।
दुलारा तुम्हारा सुने कङ्गौर
शब्द तो न्याय सदा उसे तुम्हें दिलाया।
अंगीनत है उपकार तुम्हारे जिसपर
अब बना काथोर वाही तो कौन पूछे
किसने तुम्हारा दिल दुखाया?
माँ, तुम्हें कोई समझ ना पाया,
कोई समझ न पाया।

रीमा जोशी
शिलोंग, मेघालय

सिले होंङ्ग

होंङ्ग सिले हैं मेरे,
पर बहुत गिले हैं मेरे।
क्या बोलूँ, किस पर बोलूँ,
कुछ समझ न आये मेरे ।
चाहती हूँ कुछ बोलूँ नेताओं के बारे
पर कुछ बंदिशे हैं
जो रोकती है मुझे।
सोचती हूँ कुछ बोलूँ देश के बारे
पर वहाँ भी रंजिशे हैं जो टोकती है मुझे।
आबोहवा चल रही है कुछ ऐसी
सांस लेना भी मुश्किल है जिसमें ।
जाऊँ जहाँ वहीं माहौल एक जैसा है।
फिर बोलूँ तो क्या बोलूँ!
ये मुमकिन नही लगता है ।
जहाँ मानवता चित्कार रही
दानवता ङ्खहाके लगा रही
सब खामोश बैङ्के देख रहे।
इन्तजार करते अपनी बर्बादी का ।
जब तक न पड़ेगी इन पर मार
न हटेंगे खाना देश पर खार ।
ऐसा न हो तब हो जाए बहुत देर,
कुछ ऐसे भी हैं जो जाग गये देर सबेर ,
उङ्गो हिन्द के वासिओ अब हो जाओ एक।
तब न ये देश टुकड़ों में बँटेगा ।
खुद भी बचोगे और न यहाँ कोई कटेगा ।

दया शर्मा (स्वरचित)
शिलांग (मेघालय)

आओ शक्तिमान बन जाएं

शब्द बदले नहीं अर्थ बदल गए हैं
पर्याय के स्थानों में विलोम आ गए हैं।
अधर्मी कर्मों को आजकल धर्म माने जा रहे हैं
मार-कूट, अत्याचार, नरसंहार हो रहे हैं ।
सहज मानसिकता क्षीप्रता से बदल रही है
जहर की लहरें मानवता को लील रही हैं।
कहां से आ रही हैं लहरें? किसने घोला जहर?
क्यों मानवता पर ढा रहा है कहर?
संभल जाओ मानव!
देखो ! आस्तीन में सांप तो नहीं?
ढूंढ कर मार डालो,
इससे पहले हमें डस न ले कहीं।
कहीं तो छिपा है किल्विषी गीदड़
सिंहों को लड़वा कर टपका रहा है लार।
किल्विषी ताकतें छुप कर रही हैं वार
अट्टहास कर रही है
सुनकर मानवता का हाहाकार।
समय कम है मानव आओ एकजुट हो जाएं
चपेट में आने से पहले
आओ शक्तिमान बन जाएं।
ढूंढ निकालें,मार डालें किल्विषों को
धर्म की रक्षा करें, उद्धार करें मानवता को।
आओ एकजूट हो जाएं
शक्तिमान बन जाएं।

गीता लिम्बू
शिलांग 6

न मानो हार

ना डर ना ही हार को गले लगाना है,
विषम परिस्थिति में भी निरंतर चलते जाना है।
बुरा वक़्त हर किसी के जीवन में आता है,
हिम्मत हो तो हर मुश्किल का
हल निकल आता है।
ऐसे वक़्त में लोगों की
परख भी खूब हो जाती है,
अपनों के बीच बैठे
बेगानों की पहचान हो आती है।
क़िस्मत का रोना रोए आसूँ यूँ न बहाना है,
दुख के बादल को चीरकर
उजाला जीवन में लाना है।
हालात के आगे घुटने कभी नहीं टेकना है,
डटकर मुश्किलों का सामना किए
जीत हासिल करना हैं।
परिस्थिति कैसी भी हो
विचलीत कभी न होना है,

उम्मीद का लौ जलाए आगे बढ़ते जाना है।
आत्मविश्वास को हथियार बनाए हर चुनौती से भीड़ जाना है,
राह में आए हर अड़चन को
मात दिए आगे बढ़ते जाना है।
न डर न ही हार को गले लगाना है,
विषम परिस्थिति में भी निरंतर चलते जाना है।

अनुपमा प्रधान

हूं अधूरी क्या मैं तेरे बिना?

कहते अधूरी मै तुम्हारे बिना,
पर क्या हो तुम पूर्ण मेटे बिना?
जीवन मैं देती,
पकड़ कर ऊँगली चलना सिखाती,
सही गलत का फरक बताती,
जीवन का पहला पाङ्ग मैं ही पढ़ाती,
फिर भी कहते, अधूरी मैं तुम्हारे बिना,
पर क्या हो तुम पूर्ण मेरे बिना?
थक जाओ तुम तो, साया मैं देती,
हार जाओ तुम तो हौसला बढ़ाती,
हर रिश्ते को मैं, एक धागे मे पिरोति,
कभी हताश तकिया भिगोती,
पर मुस्कुरा हर जीवन में खुशियाँ लाती,
घर हो या बाहर, दक्षता से अपना हर कर्त्तव्य निभाती,
फिर क्यों? क्यों कहते हो अधूरी मैं तुमहारे बिना,
क्यों मेरे अधिकारों को तुमने मुझिसे छिना,
दिया जीवन मैंने,
सिखाया जब मैंने ही जीना,
जन्म से मृत्यु तक तुम्हारा हर पल, हर रिश्ता जब है अधूरा मेरे बिना,
फिर क्यों कहते, अधूरी मैं तुम्हारे बिना,
क्या हो तुम पूर्ण मेरे बिना?

शबरी सरकार

सनातनियों पर अत्याचार

आज फिर सनातनियों को
समाप्त करने की कोशिश हो रही है।
जगह-जगह मंदिरों को
नष्ट-भ्रष्ट करने की चेष्टा हो रही है।
सनातनियों पर नरसंहार अत्याचार हो रहा है।
जीवन जीने के पथ को
मिटाया जाने की भरपूर
जोड़ लगाया जा रहा है।
पर यहाँ प्रश्न मेरा यह हैः
क्यों सह रहे हैं हम सनातनी?
हमें तो अभी गर्जना करनी है।
हुंकार लगाकर सबको

अपने अस्तित्व की रक्षा करना है।
हज़ारों साल से हो रही
कोशिशों को मिटा देनी है।
हम शांति प्रिय हैं,
शांति की रक्षा के लिए
खुद को मिटाने के लिए भी तैयार हैं।
पर अगले उस बलिदान को जब हमारी कायरता समझे, हमारी कमजोरी सोचे,
क्या तब हमें अपनी रक्षा के
अस्त्र नहीं उठाने चाहिए?
हे सनातनी, जागो उठो और
अपने अस्तित्व को बचाओ।
दलित, तेली, ब्राह्मण,
कायस्थ आदि से
ऊपर उठकर केवल कहोः
हम एक हैं और हम सनातनी हैं।
इसी की रक्षा हमें करनी है।

मल्लिका डे विष्णु

अब भी चुप हो

देखकर नरसंहार
चुप्पी साधे हैं मानवता के ठेकेदार
कैसे देख लेते हो
इंसान को जिंदा जलते हुए
नफरत की आँधी में
खाक हो गयी इंसानियत
कुछ तो बोलो
ओ! मानवता के ठेकेदार
रूह नहीं काँपती तुम्हारी
एक मासूम, कई दरिन्दें
हैवानियत की आँधी
उड़ा ले गयी आहें! कराहें!
कुछ तो महसूस करो दर्द
ओ! मानवता के ठेकेदार
पट गयी धरा मृतकों से
कण-कण रक्तरंजित हुआ
बाँटना मौत उनका अधिकार
कुछ तो जीवन से प्रेम करो
ओ! मानवता के ठेकेदार
बेबसों की चित्कार
इज्जत होती तार-तार
इंसानियत हो रही शर्मसार
मृत्यु का नग्न नृत्य
जीवन गया हार
अब भी साधे मौन हो
तुम सुरक्षित कौन हो?

डॉ अनिता पंडा 'अन्वी'
बंगलुरू, कर्नाटक

मानवता

हे मानव,
कैसी आलौकिक कृति है तू,
बनाया तुझे सृष्टि के मालिक ने,
क्या सोच कर भेजा तुझे,
इस धरा पर,
निर्माण करेगा,
एक नई सृष्टि रचेगा,
उस सृष्टि का तू पालक बनेगा,
तेरे द्वारा ही जन्म होगा एक प्रजाति का,
जिसमें न होगा स्थान धर्म और जाति का,
तू तो मानव है,
मानवता ही तेरा धर्म और जाति होगी,
तुझसे अलग केवल,
पशु पक्षियों की प्रजाति होगी।
हे मानव,
करेगा हर काम मानवता के
हित में,
नहीं होगा धर्म-जाति का द्वेष तेरे चित्त में,
लेकिन भूल गया तू अपने पूर्वजों को,
बंट गया पंथ, धर्म, जाति के भेद में क्यूं,
बंट गया तू वर्ण भेद में,
अहंकार के मद में चूर हो गया,
लेकिन खुद को बड़ा साबित करने की होड में,
मानवता से तू दूर हो गया।
लगा दी होड़ अपने वर्चस्व को बढ़ाने की,
जला दी मशाल दूसरों को मिटाने की,
सोच कितना मूर्ख है तू, समझ नहीं पाया है,
हर पल तेरे सर पर काल का साया है,
मिट्टी का तन तेरा,
पंचतत्व की तेरी काया है,
मिट्टी है तू, मिट्टी में मिल जाएगा,
यहां राजा हो या रंक,
कोई न बच पाया है।
तुझे तो बनाया था सृष्टि का रक्षक,
फिर क्यों बन गया है तू भक्षक,
क्यों ये मार काट,
क्यों नर संहार कर रहा,
क्यों दूसरों को मार,
खुद भी मर रहा है,
क्या देगा आने वाली पीढ़ी को,
नहीं जनता तू,

अपने पतन की ओर तू बढ़ रहा है।
याद रख,
धर्म अधर्म से जब टकराएगा,
सामने वाला भी शस्त्र उङ्गाएगा,
महाभारत होगी,
मरण मारण की प्रतिस्पर्धा होगी,
फिर प्रलय को रोक नहीं पाएगा।
धर्म-जाति का चश्मा उतार,
शांति का संदेश सीख,
कृष्ण, नानक, बुद्ध को याद कर,
छोड़ निजता दानव की,
मानव है तो मानव बन कर देख,
हर इंसान एक जैसा ही नजर आयेगा।
ये देश, ये धर्म, ये जातियां तब ही बच पाएंगे,
मानवता को बचाने की खातिर,
छोड़ निजता को,
छोड़ दानवता को,
शांति से रहना, जब सीख जायेंगे।
नीता शर्मा

दिवाली

अब की दिवाली कसम हम यह खाएँ
महोबत के चहुँ और दिए हम जलाएँ
खुशियों के रंग हम भरे हर तरफ यूँ
लहू की रंगोली को जड से मिटाएँ ।
नफरतकी आँधी से शमआ ऐ
महोबत बुझ रही है
फानूस बन कर उसे हम बचाएँ।
समझना है हमको चमन है यह सबका
मिलकर सभी इक गुलदस्ता बनाएं ।
दिलों में बसा है अंधेरा घेनेरा
खुलूसे दिए से उसे हम भगाएं ।
मिट्टी के दिए में है खुशबू वतन की
आओ मिलकर इनसे घर जगमगाएँ ।
चलो गोजा रोशन करें घर हम उनका
जिन्होंने मिट्टी के दिए ये बनाएं।
सुनीता भट्ट गोजा
जम्मू कश्मीर

घुट घुट के जी रही हूँ

घुट घुट के जी रही हूँ
मैं इस ज़िंदगी के साथ।
ग़म पीछे पड़ गए हैं
मेरी हर खुशी के साथ।।
दुख दर्द अश्क प्यार में हासिल हुआ मुझे।

ये है सिला वफ़ा का मेरी आशिक़ी के साथ।।
रोने को मैं भी रोती मगर सब्र के तुफैल।
हंसती रही हमेशा बड़ी बेबसी के साथ।।
मुझको मेरी वफाओ ने बदनाम कर दिया।
ऐसा खुदा ने हो कभी भी किसी के साथ।।
हँस हँस के लूट लेते तो ग़म न था अज़ीज़।
लूटा मुझको उसने बड़ी बेरुखी के साथ।।
अफ़रोज़ अज़ीज़

सिलसिले कुछ प्यार में ऐसे रहे

सिलसिले कुछ प्यार में ऐसे रहे
गुल, बहार, चाँद राहों में रहे
शोख़ नज़रें जागती थीं रात भर
कहकशाँ दामन में सिमटे ही रहे
धड़कनों में गीत मीड़ें से नये
चाहतों के साज़ पे बजते रहे
हसरतों ने छू लिया था आस्माँ
ख्व़ाब कितने कदमों से लिपटे रहे
रात की बरसात दिल का हाल बन
खत् में रिमझिम सा बरसते ही रहे
डॉ. रश्मि झा

धान की बाली

बजाई जाए कहीं
रोपाई जाए कहीं
तू धान की बाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
तेरे होने से ही घर में
ती खुशियों की उजाली
जैसे पूजा में अक्षित
वैसे हर घर में पूजा की तू थाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बचपन से ही तेरे लाडो में
होती होली और दिवाली
विदा होकर तू एक दिन
कर जाती घर को खाली
तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
बेटी तू धान की बाली
रीना प्रदीप कुमार

२०२४ की खट्टी मीठ्ठी यादें

बीत रहा है वर्ष 24का,
नव वर्ष आने को है..।
गुजरता हुआ साल देखो,
कुछ पल में जाने को है ।
समय कभी रुकता नहीं है,
समय का पहिया चलता है।
गुजरता हुआ वक्त देखो ..,
आगे बढ़ने की शिक्षा देता है।
प्रतिदिन सुरभित होता उपवन,
जीवन जीने का अंदाज सिखाता है।
नवल पुष्प को देख मेरा मन,
नव सृजन की उमंग जगाता है।
गुजर गया जो भूल के,
आगे बढ़ना हमें सिखाता है।
गुजरता हुआ साल ...,
खट्टे मीठ्ठे अनुभव की, याद दिलाता है।
नई उमंग व नई तरंग ले,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।
खुशियों भरा साल हो 25
नव वर्ष तेरा अभिनंदन है।

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

जागो सवेरा हो गया!!

जागो सवेरा हो गया
सूरज लाली से लिपट गया
चहुओर उजियारा छाया
कोयल ने कुहू -कुहू गाया
उधर मुर्गा कुकडू- कू चिल्लाया ।
चिड़िया चू-चू गाती आई
सभी अपने काम मे लग गए भाई
कृषक खेत मे हल जोत रहा
श्रमिक अपने रोजगार पर चल पड़ा
बच्चे भी स्कूल को रवाना हुए
सब अपने काम मे व्यस्त हुए ।
जागो सवेरा हो गया
सूरज लाली से लिपट गया....
तुम भी उठ्ठ तैयार बनो
अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर रहो
अभी लगे तुम्हे जीवन खेल तमाशा
मेरी मानो जीवन नही कोई उपहासा ।
जो तुम सोते रह जाओगे
आजीवन पछताओगे....
अपने जीवन का उद्धार करो

अपने लक्ष्य को निर्धारित करो
सुयोग की अपेक्षा मत करो क्योंकि...
परिश्रम ही सफलता का सोपान हैं ।
जागो सवेरा हो गया ।
सूरज लाली से लिपट गया ।।

पूनम अग्रवा
गोलाघाट,असम

गुरु वशिष्ठ

ब्रह्माजी के मानस पुत्र बनकर धरा पर आए
दशरथ जी के ज्ञानी राज कुल गुरु कहलाए !
माता अरुंधति से
इनका पाणी ग्रहण संस्कार हुआ
सत्य और ईश्वर का जिन्हें
एक साथ दर्शन हुआ!
सप्तर्षियों में ऋषि वशिष्ठ का नाम है आता
जप-तप शहनशीलता और
ज्ञान के थे ये विधाता !
ऋषि वशिष्ठ की महिमा गाकर
हम ज्ञान के दीप जलाएं
इन्हीं के उपदेश से भगीरथ
मां गंगा को धरा पर लाए!
भारत देश की धरती को गर्व है
जो गुरु हुए ऐसे महान
पल पल स्मरण रखें इनका
चले इनके कदमों के निशान!
इस धरती पर हमने जन्म लिया
अहो !भाग्य हमारे
सत्य और ज्ञान के
दीप जलाकर दुख हमारे टारे !

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

दुख सुख

दुख जब भी तुझ पर आएगा
तब मन तेरा घबराएगा
कोई तरकीब न सूझेगी
दिल जैसे बैठ्ठ जाएगा
तू अपनों के घर जाएगा
दुख अपना उन्हें सुनाएगा
सब सुन अफ़सोस जताएंगे
पर दुख वे बांट न पायेंगे
क्या मिलेगा धीरज खोने से
चिल्लाने से या रोने से
जो लिखा है तेरी क़िस्मत में
न रोक सकेगा होने से

इस दुख को तू एक बैल समझ
हिम्मत कर इसके सींग पकड़
चढ़ बैठ उसे कर काबू में
इतना दम है तेरी बाहू में
दुख से निराश न होना तू
मन का विशवास न खोना तू
लड़ते रहना मरते दम तक
जो पा सकता न खोना तू
अंतर मन की इस शक्ति को
पहचान अगर तू जाएगा
उस दिन दुख का तूफान कोई
तुझको झकझोर न पाएगा
इस ताक़त को पहचान मनुज
दुख सुख को तू दे मान मनुज
झेलेगा जब तक न दुख को
कैसे समझेगा तू सुख को
दुख सुख जिस दिन सम पाएगा
उर चिर आनंद समाएगा

डॉ शिवानी चंद्रा

अहमियत

बरबादी से अन्न की, हो हलधर अपमान।
झेले मौसम मार जो, उसका रखना मान।।
कितने वे लाचार सब, जीवन लगता भार।
बोझिल उनकी जिंदगी, मिलती उनको हार।।
हर दाने की अहमियत, जीवन का जो सार।
करते क्यों बेकार तुम, मिलती सबको मार।।
आडंबर के खेल में, बनते बहु पकवान।
जूठन छोड़े थाल में, कैसी यह है शान।।
भूखे कितने लोग हैं, उसपर किनका ध्यान।
भूले अब निज धर्म हैं, मुश्किल में है जान।।
कूड़े में उच्छिष्ट है, बीने बालक आज।
अकसर दिखता दृश्य है,
कुछ तो कर ले लाज ।।
बिखरी पतलें हैं धरा, फैली होती रोज।
मिलकर निर्धन चाटते, कैसा है यह भोज।।
ऊपर रखते स्वाद जो, करते भोजन नष्ट।
सोचो इस बारे तनिक, क्यों देते हो कष्ट।।
परहित का बस शोर है, थोथा देते ज्ञान।
समझो कीमत धान्य की, करना है अब दान।।
कहे अर्चना है यही, निर्धनता अभिशाप।
खाली जिनके पेट हैं, भरना उनको आप।।

अर्चना कोहली 'अर्चि'

ग़ज़ल

तुम बिछड़ने की इल्तिज़ा न करो
ज़ीस्त में मुझको ग़मज़दा न करो
फेरकर मुँह जो चल दिए मुझसे
रब्त का तुम यूँ खात्मा न करो
जो उसूलों का दम निकाले है
सामने उसके तुम झुका न करो
मुस्कुराहट रखा करो रुख पर
बात बेबात तुम अड़ा न करो
दिल की आवाज़ को सुनो दिल से
तुम कभी उसको अनसुना न करो
मैं हूँ इंसान मुझमें है खाम़ी
पूज कर मुझको देवता न करो
ये ही तो ज़िन्दगी का हासिल है
ज़ख्मे-दिल की कोई दवा न करो
बाद मुद्दत के अब मिले हो 'अनु'
हमसे तुम कोई भी गिला न करो

अनीता सिंह 'अनु'

एक वर्ष और कम हो चला

जिन्दगी का एक औरङ ङ्वर्ष कम हो चलाङ
कुछ पुरानी यादें पीछे छोड़ चला

कुछ ख्वाइशें दिल में रह जाती है
कुछ बिन मांगे मिल जाती हैं ..

कुछ छोड़ कर चले गये
कुछ नये जुड़ेंगे इस सफर में

कुछ मुझसे बहुत खफा हैं
कुछ मुझसे बहुत खुश हैं

कुछ मुझे मिल के भूल गये
कुछ मुझे आज भी याद करते हैं

कुछ अभी तक शायद अनजान हैं
कुछ अभी तक बहुत परेशान हैं

कुछ को मेरा बेसब्री से इंतजार हैं
कुछ का मुझे अधीरता से इंतजार है

कुछ सही है
कुछ गलत भी है
कोई गलती हुई हो तो माफ कीजिये
और
कुछ अच्छा बेहतर लगा हो

तो हमेशा अल्पना को याद कीजिये
- डॉक्टर अल्पना जैन

मेरे श्याम

कभी न मुझको भूलना,
हे ! मेरे घनश्याम।
तुम ही मेरी सांसें, धड़कन
तुम ही मेरे श्याम।
मन के आलय में आ बसो,
सुनो मेरे मन की पुकार।
पुष्पों से सजा हुआ है,
मेरा आँगन द्वार।।
मेरे मन के कोने में,
मोहन करो तुम प्रकाश।
क्रोध,लोभ के दानव का,
प्रभू तुम करो विनाश।।
रोम-रोम मेरा जपता,
मोहन तेरा ही नाम।
मन मंदिर में तुझे निहारूँ,
में तुमको सुबह-शाम।।
मेरे मन की पीड़ा समझो,
है तुमसे अरदास।
आखिर तुम दर्शन दोगे,
है!यह पूरा विश्वास।।
कृष्ण -राधा का अनंत प्रेम,
सब ही जाने जगत में।
पल-पल राधा नाम जपे,
कान्हा -कान्हा हृदय में!!
सुषमा सिंहङ्उर्मि

'ये बेटियां'

मेरी बेटी अब पराई होने लगी है,
जो घूमती थी कभी खुशी से पूरे घर में, समझती थी सब कुछ अपना, देख रही हूं मैं,
कि उसकी अटैची अब ड्राइंग रूम के कोने में लगी है,
मेरी बेटी सच में पराई होने लगी है।
जो कहती थी कभी नहीं जाऊंगी छोड़कर तुम्हें,
पर अब चार दिन के लिए आई हूं सिर्फ मम्मा ,
ये कहकर रोने लगी है,
मेरी बेटी सच में पराई होने लगी है।
जो पहले खोलती थी कपड़ों से भारी अलमारी,
क्या पहनू मां
कुछ और ला दो ना,
अब उसी अलमारी से अपने कपड़े बांटरही है,
सब चीज संभाल रही है,
देखती हूं मैं उसकी अलमारी से

बहुत सारी चीज कम होने लगी हैं,
मेरी बेटी सच में अब पराई होने लगीहै।
चिड़ियों की तरह चहचहाती और इङ्गलाती थी
जो पूरे घर में ,
अब सिमटी बैङ्गी एक जगह पर
बचपन की यादों में खोने लगी है,
मेरी बेटी सच में अब पराई होने लगी है ।

पुष्पा सिंह

गीत

कैसे आऊँ पास मैं तेरे।
कंकड़ चुभते राह घनेरे।
मन था एक श्याम को अर्पण
लाऊं कहाँ से मीत अनेरे।
वंशी धुन रस कान परे पर
गइयाँ ग्वाल सब दौरि परे रे।
बजनी पायल तुरत उतारी
तब तक कंगना बाज गए रे।
नंगे पायँन मैं छुप निकसी
तौ लगि साजन जागि परे रे।
प्रेम साँवरे तुम संग मेरो
बाकी जग सब बिरथा है रे।
निशदिन तेरा नाम जपूँ मैं
जग मुझको बावरी कहे रे।

डॉ सुषमा त्रिपाङ्गी

स्नेह

मुक्त कर से बांटती हूँ स्नेह जग को
रिक्त पर मन कोष ये होता नही है।
देखती हूँ जब व्यक्ति मानव हृदय को,
डूब जाते है व्यथा से गान मेरे,
एक कटु अनुभूति उर झकझोर देती,
छलक जाते स्वयं दृग अनजान मेरे,
है मुझे विश्वास ऐसे तो जगत मे,
व्यर्थ ही कोई कभी रोता नहीं है।
मैं नहीं अनुचित कभी स्वीकारती हूं,
सह न पाता मन कभी अन्याय मेरा,
चाहती हूं हो न पाए इस हृदय की,
भावनाओं मे कलुषता का बसेरा ,
यह समझती हूं नही हूँ देवता मैं
दुध से कोई हृदय धोता नही है।
मैं सभी मे रूप उसका देखती हूँ
प्रेरणा जिसकी प्रदर्शित पंथ करती,
' ज्योति ' बन कर जो समाया है हृदय मे,
प्राण मे जो एक अनहद नाद भरती,

दूर हूं मैं पूजा से मगर मन आस्था
प्रभु मे कभी खोता नहीं है।
मुक्त कर से बांटती हूं स्नेह जग को
रिक्त पर मन कोष ये होता नहीं है।

पूनम पांडे

माँ

माँ, तू मेरी दुनिया, तू मेरा आसमान,
तेरी गोद में मिलता है मुझे सुकून महान।
तेरी आँखों में छिपा है सारा संसार,
तेरे प्यार में है मेरा हकदार।
तू मेरी पहली गुरु, तू मेरी पहली दोस्त,
तेरी हर बात में है मेरा भरोसा अटूट।
तेरी डांट में भी छिपा है प्यार अथाह,
तेरी ममता ने मुझे बनाया बड़ा।
तू मेरी ताकत, तू मेरी शक्ति,
तेरे आशीर्वाद से मिलती है
मुझे सफलता की राह की गति।
तेरी हर मुस्कान से जगमगाता है मेरा दिन,
तेरी यादों में खो जाता हूँ मैं अक्सर।
तू मेरी चिंता करती है हर पल,
तू मेरी हर खुशी का कारण है।
तेरे लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ,
तेरा प्यार है मेरी जिंदगी का आधार।
तू मेरी मां, तू मेरी देवी,
तेरे चरणों में नमन करता हूँ मैं।
तेरी ममता का जादू है अद्भुत,
तेरे बिना मेरी जिंदगी अधूरी है।

सुनीता गुप्ता

राम

मोहक राम सियावर सुन्दर देख सभी हरषें छवि प्यारी।
हे प्रभु सृष्टि धरा सबके तुम चालक पालक सूरत न्यारी।।
विध्न हरो प्रभु जी यह भक्त मुसीबत हैं सहते अब भारी।
भोग लगे प्रभु हर्षित होकर दें वरदान सुखी नर नारी।।
भव्य मनोहर मंदिर मूर्ति धरी अति मोहक भक्त खड़े हैं।
हे प्रभु धीर धरें कितना अब देख मुसीबत द्वार पड़े हैं ।।
रूप लगे मनभावन शान्ति यहाँ यह दे अब दुःख तड़े हैं।
पीर सता कर खूब रुलाकर बोल रही क्या प्रभु हाथ बड़े हैं।।
यूँ अनमोल धरा पर देव कृपा सुख दे अति सुन्दर होती।
संकट से घबरा कर क्यों किस कारण वो दुनिया अब रोती।।
लालच में फँसती यह अक्सर बुद्धि व्यथा उर भीतर बोती।
प्रीत लगे जब भी प्रभु के चरणों मिलते तब हीरक मोती।।

सीमा वर्णिका

उड़ान

ऊंची एक उड़ान की आस है,
ख्वाब ये मेरा बड़ा खास है।
न जाने कब पूरी होगी ये तमन्ना,
सफलता का इक घूट पीने की प्यास है।
मेरे दिल का बस यही जज्बात है,
बात जिससे शुरू हो ये वो बात है।
न मुमकिन को मुमकिन में बदल दे जो ,
ऐसी सुनहरी सुबह की वो रात है।
चंद कोशिशों से न संवरेगा जहाँ,
लाखों सीढ़ी चढ़नी होगी तुझको यहाँ।
तब कही जाके सफलता चूमेगी कदम,
खुशियां ही खुशियां होगी फिर वहां।

श्रद्धा श्रीवास्तव

ख़ामोशी

बस पंद्रह या सोलह की ही
होगी वह इक कली सी नाजुक,
पर अभाव की आभा मुख पर
थी चेहरे पर अलग उदासी ।।
गोंद में था उसके इक बालक
अधिक कुपोषित अति दुर्बल सा
माँ के आँचल में सिमटा था
आतुर क्षुधा मिटाने को ।।
जो स्वयं समय की मार से आहत
भूख प्यास से लड़ती चलती
भला एक नन्ही सी काया
उससे कैसे जुड़ा ही पाती ।।
आँखें अति आतृप्त सी रूखी
मांसलता थी कोसों दूर
अधरों पर बेसुध ख़ामोशी
प्रहरी सी हो रही प्रतीत ।।

डॉ सुमन सिंह

देहरी छूटी जाय री अम्मा

देहरी छूटी जाय री अम्मा, नैहर छूटा जाए।
बाबुल भी पछताय री अम्मा, अंसुवन नीर बहाए।।
काहे को तूने ब्याह किया री, काहे करी विदाई।
कोख की जाई बेटी तूने ,पल में करी पराई।
पीर भरी ये रीत ये रस्में क्यूं दुनियां ने बनाई।
छोड़ के अपना सब कुछ जाना , जाना देश पराए।
देहरी छूटी जाय री अम्मा नैहर छूटा जाए।
सखियों के संग झूला झूली, अमिया, जामुन तोड़े।
फूट फूट अब रोवें सारी हमसे मुखड़ा मोड़ें।
छूट रही हैं गलियां, सखियां मिलन के संग बिछोड़े

क्या क्या हमसे छूट रहा री किसको ये बतलाए।।
देहरी छूटी जाय री अम्मा, नैहर छूटा जाए।।
तेरे आंगन फुदकी ,चहकी बनके मैं तो चिड़िया ।
छुप छुप-सखियों के संग खेले, हमने गुड्डा गुड़िया।
टूट गया मन जैसेखिलौने ,छूटे द्वार किवड़िया।
ओ मेरी मैया पांव पड़ूं तेरे, जल्दी लियो बुलाए।।
देहरी छूटी जाय री अम्मा, नैहर छूटा जाए।

प्रोफ़ेसर पूनम चौहान

जीवन संग्राम

जीवन एक संग्राम है, इसमें कहीं ना विराम है।
संघर्षों से जीत गया जो,उसे ही आराम है।
नदिया चलती सागर से मिलने
रोकते कभी ना राह के रोड़े,
खो जाती उदधि के उर में,
बनते कभी ना पत्थर व्यवधान हैं।
संघर्षों से जीत गया जो उसे ही आराम है।
निर्झर सुंदर गीत सुनाते ऊपर से नीचे गिरते जाते,
गिर कर चल देते अपनी मंजिल पर,
जग कि वे प्यास बुझाते बनाते पत्थर उन्हें ही महान है।
संघर्षों से जीत गया जो उसे ही आराम है।
गति जीवन का सत्य चिरन्तन,
जीवन का यह निश्चित नर्तन
सूरज चांद सितारे चलते चलते अवनी सारी,
यही जीवन का हैपरम ज्ञान ।
जीवन है एक संग्राम इसमें कहीं ना है विराम

मंजु गुप्ता, बिजनौर।

बहुत चिराग बुझाए होंगे...

बहुत चिराग बुझाए होंगे , तूने ऐ हवा
कुछ जलाकर भी दिखाओ तो बात बनें ।
तन्हा तन्हा बोझिल होता है सफर
संग अपनों के चलो तो बात बने।
खामोशियां बढ़ा देती हैं ,फासले अक्सर
कभी मिल बैङ्ग बतियाओ तो बात बने ।
रुलाने को तो अक्सर रुलाते हैं लोग
कभी किसी को हंसाओ तो बात बने ।
यूं कांच की मानिंद बिखरना लाजमी तो नहीं
' सुमन' बन के खुशबू बिखरो तो बात बने।

-सुमन चौधरी 'सुमन'

अभिनंदन--आगन्तुक नववर्ष

'आओ आओ आगन्तुक नववर्ष!
मैं पलक पाँवड़े बिछाये कर रही तुम्हारा इंतजार नववर्ष।
आओगे तुम आओगे- जीवन में हर्ष भर जाओगे,

फिर कभी नही याद आयेगा बीता वर्ष-- तुम छा जाओगे।
गतवर्ष की यादें भी हालांकि कुछ कम नही हैं नववर्ष!
उन्हें भी स्मृतियों में जीवन्त कर--
करेंगे हम तुम्हारा स्वागत नववर्ष !
अपने सुनहरे पंख पसारे तुम
हर्ष सुमन बिखराते चले आओ,
आओ आओ आगन्तुक नववर्ष!
तुम्हारे अभिनंदन में हमनें
अपने द्वारे चौबारे खुशियों की
रंगोली से सजाये हैं,
गतवर्ष श्री राघव सरकार भी
तुम्हारा सम्मान बढ़ाने को अयोध्या आये हैं।
आओगे तुम नववर्ष--
तो आनंद मंगल देख-
हर्षित हो जाओगे,
और स्वयं भी आनंद वृष्टि करने को तत्पर हो जाओगे।
तुम आतिथेय स्वीकार करो हमारा,
हमने तो आतिथ्य में अपना तन-मन है हारा।
पर तुम नवल भव्य अतिथि हो!
कुछ तुम भी तो नव्य नवल उपहार हमारे हित लाओगे।
तुम भी तो हमें अपने मधुर
शिष्ट प्रेम से हमें सिक्त कर जाओगे,
अतिथि नववर्ष--
बस तुम आजाओ--
बहुत प्रेम आदर सत्कार हमसे पाओगे।।'
डॉ आभा माहेश्वरी अलीगढ

नेह ज्वाला बुझ गयी

नेह ज्वाला बुझ गयी है और इच्छाएं मरी हैं।
हा! समय की बेल से ये कौन क्षणिकाएं झरी हैं।
आ गया पतझर शिशिर का झर चुके हैं पीत पल्लव,
पर हृदय वन में अभी तक कष्ट लतिकाएं हरी हैं।
ढूंढते हैं शब्द किञ्चित व्यक्त जिनसे कर सकें हम,
भाव गृह की देहरी पर मौन कविताएं धरी हैं।
रिस रही हैं रक्त बूँदें अश्रु मत समझो इन्हें तुम,
चक्षुओं में भग्न मन की सूक्ष्म कणिकाएं भरी हैं।
शोक विगलित अश्रुओं के उस भँवर में डूब कर ही,
वेदनाओं की नदी में भाव नौकाएं तरी हैं।
ऋतुबाला रस्तोगी

'चलो साथियों!चलें महाकुंभ का मेला'

चलो साथियों, चलें प्रयाग महाकुम्भ मेला।
देखें भारत की श्रद्धालु भीड़ का अपूर्व रेला।।
पावन गंगा के निर्मल जल में करेंगे स्नान।
संक्रांति के शुभ पर्व पर करेंगे पुण्य दान।।

बारह वर्षों में लगता है यह आस्था कुम्भ।
पौष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से हो रहा प्रारंभ।।
कुम्भ हमारी आस्था -विश्वास का प्रतीक।
सनातन धर्म जप-तप आराधना स्वरूप।।
कुम्भ सनातन धार्मिक परंपरा का उत्सव।
कुम्भ आध्यात्मिक चेतना का है महोत्सव।।
भारत के कोने-कोने से आते हैं यहाँ लोग।
करते गंगा स्नान,जप-तप,ध्यान और योग।
नागा- साधु का जुलूस मेला बनाए रोचक।
साधु- संतों के प्रवचन से होगी खूब रौनक।।
महाकुंभ धर्म,आस्था ,विश्वास का है संगम।
प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती का है संगम।।
त्रिवेणी के संगम में स्नान कर पुण्य कमाए।
महाकुंभ के उत्सव का हार्दिक आनंद उड़ाएं।
आशा जाकड़, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

कुंभ

कुंभ की महिमा अपरम्पार,
एकादशी की रात, शुभ संकेत सार।
गंगा की धारा, शुद्ध और पवित्र,
कुंभ में स्नान, आत्मा को निर्मित्र।
मेले की धूम, भीड़भाड़ का शोर,
साधु-संतों की टोली, भक्ति का संचार।
कुंभ की कथा, पुराणों में वर्णित,
देवताओं और असुरों के बीच,
अमृत की खोज की कथा अनवर्णित।
हरिद्वार, इलाहाबाद, उज्जैन और नाशिक,
कुंभ के चार स्थल,
भारत की सांस्कृतिक धरोहर।
कुंभ का संदेश, एकता और सद्भाव,
मानवता की सेवा, कुंभ का मूल मंत्र।
अनीता दुबे

सूर्य मकर है

सूर्य मकर है अब बसें, लोग मनाऐ पर्व।
तिलों गुड़ों सम मिल रहें, प्रीत बढ़ाऐ पर्व।।
प्रेम समर्पण दान में, डूबे है संसार।
सत्य धर्म का मंत्र है, राह दिखाऐ पर्व।
फूल खिले सरसों खेत, पवन हुआ चितचोर,
एक दूसरे से मिलें, यही बताऐ पर्व।।
रंग बिरंगी सब गगन , उड़ें पतंगें आज,
सूर्य देव है अति प्रखर,गंग नहाए पर्व।।
रंग एकता का दिखें, प्रीत प्यार के संग,
दान धर्म प्रभात करें, भोग चढ़ाऐं पर्व।।
नदी स्नान करने गये, नजर सुखद लखि भोर,

पीत वस्त्र पहने सभी, मिलें मनाऐ पर्व।।
राम नाम मन में बसा, कृपा सुखी सब लोग,
याद सभी करती प्रीति, कथा सुनाऐ पर्व।।
उमा मिश्रा प्रीति

जाते हुए लम्हो
जाते हुए लम्हों की मोती पी रो रही हूं
यादों की कड़वाहट को हटा खुशी के
मोती भर रही हूं
पतझड़ सा विषाद तो कभी होङ्कों पर मुस्कुराहट लाया
गम और खुशी के बीच का तारतम्य निभा रही हूं
ऐजाते हुए लम्हे मेरे बचपन की बेफिक्री दे जाना
ऐ जाते हुए लम्हे खट्टी मीङ्की यादों का फुहारा दे जाना
ऐ जाते हुए लम्हे दुख ले सुख की नई किरण दे जाना
ऐ जाते हुए लम्हे ताकत हिम्मत और हौसला दे जाना
ऐ जाते हुए लम्हे अपनों का प्यार झोली में भर जाना
ऐ जाते हुए लम्हे अनगिनत हुई भूल को सुधार जाना
ऐ जाते हुए लम्हे आधार पर
एक मीङ्की सी मुस्कान सजा जाना
ऐ जाते हुए लम्हे सनातन संस्कार के दीप जला जाना
ऐ जाते हुए लम्हे रावण को जला दिवाली माना जाना
ऐ जाते हुए लमहे धूप छांव के रंग तो तूने दिखलाए अपनों और बेगानों के बीच फर्क को समझाया अब धरा पर
हलियाली और गगन पर मुस्कुराहट दे जाना
ऐ जाते हुए लम्हे हाथों में रुमाल और आंखों में सवाल शेष है पानी की बूंद सा यह जीवन है
विश्वास की डोर को पकड़ा कर समझ जाना
ऐ जाते हुए देश का नाम ऊंचा कर जाना
ऐ जाते हुए लम्हे धन-धन से पूर्ण मंदिर शिवालय बने राम के नाम की गूंज चारों ओर उङ्गे
सीमा सुरक्षित हो तिरंगा लहराता रहे
अब हमें किसी के स्वागत तो किसी की विदाई विदाई करना है इस पुनरावृत्ति को हमें दिल से निभाना है

ऋजु पांडेय
प्रयागराज गोविंदपुर

गज़ल
कुंभ मेला है इसका असर देखिये
झिलमिलाता दिखे यह नगर देखिये।
बूँद अमृत गिरी थी कलश से जहाँ
आइये वो ज़मी भर नज़र देखिये।
आज चौराहे सड़के सजी गलियों पर
भक्ति की बह रही वो लहर देखिये ।
साधू संतों का यूँ इक नगर बन गया

गूँज भजनों की है हर पहर देखिये।
घाट पर भीड़ श्रद्धालुओ की बहुत
और पंडालो में इक शहर देखिये।
खूब भंडारे भी लोग करते जहाँ
कितनी पावन धरा सोचकर देखिये।
धर्म 'रचना' सनातन कहे इक यही
सभ्यता जो अनोखी इधर देखिये।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

आत्मसम्मान

आज मेरे पति ने मुझे नहीं मारा
आज मेरे बेटे ने भी मुझ पर हाथ नहीं उठ़ाया
लेकिन आज मेरे आत्मसम्मान ने
मुझे ज़ोर का थप्पड़ लगाया
फर्क सिर्फ इतना-सा है कि
मेरे पति द्वारा दी गई चोट का दर्द अब कम हो गया है
लेकिन इस थप्पड़ की झुंझलाहट मेरे सीने में टीस पैदा करती है। मानो सदियों के ज़ख्म
अब नासूर बन चुके हैं
वर्षों से इन ज़ख्मों को मैं बस दबाई चली आ रही हूँ
खुद को स्वयं ही मैं कुचलती चली जा रही हूँ।
मेरे होने न होने के प्रश्न का अस्तित्व ही ना हो मानो
मेरी कहानी, मुझसे बेहतर तुम क्या जानो ?

चेहरे पर घाव देकर, लिपिस्टीक, बिंदी, लाली खरीद कर दे देना तुम्हारा पतिधर्म होगा,
तुम्हारे लिए
लेकिन उस घाव पर पाऊडर थोप के छुपा देना
मेरा पत्नीधर्म कब बन गया, मुझे पता तक नहीं चला।
हाथ पकड़ कर, मेरे पीठ़ के पीछे मरोड़ देना
और रात को पैर छूकर, उस दिन का अंत कर देना
तुम्हारा पुत्र धर्म होगा, तुम्हारे लिए
लेकिन अगले दिन ममता की मारी,
अपने उन्हीं हाँथो के तुम्हें निवाला खिला देना
मेरा मातृधर्म कब बन गया, मुझे पता तक नहीं चला।

इससे बेहतर तो हत्या होती मेरी
कम के कम समाज के सामने अपनी काली चोटों को यूँ पल्लू से छुपाना तो न पड़ता।
अपनी करहाती चीखों को यूँ अपनी ही हथेलियों से दबाकर सिसकना तो न पड़ता।
और ऊपर से यह समाज और समाज की बातें
मेरे सीने की टीस को दोगुना करती है।
कौन है यह समाज, क्या है यह समाज ?
वो जो मेरे पति को बनाता है ?
या मैं खुद ही हूँ वो समाज जिसने मेरे बेटे को इस टूटे हाथ के निवाला खिलाया है ?
क्या मैं और मेरी जैसी सैंकडो औरते भी हैं वो समाज
जिन्होंने मर्दों के टूटे अहम् को, अपने बदन पर पड़े नील से जोड़ा है?

गलती किसकी है अब ?
सहन करने वाले की भी शायद
लेकिन जिस समाज की बेड़ियो में मुझे जकड़ा हुआ है,
उस समाज का निर्माण मैंने तो नहीं किया था
जो समाज मैंने रचा था, वो तो बेहद संजीदा था
मेरे समाज में तो मैंने ना पितृसत्ता की बात की
और ना ही मातृसत्ता की बात की,
मेरे समाज में तो मैंने सिर्फ बराबरी की बात कही।

लेकिन आज मेरा आत्मसम्मान वापस जागा है
मेरी शारीरिक पीड़ा और मानसिक यातनाओं का हिसाब मुझे स्मरण हो आया है।
कहीं दबा पड़ा था, सहमा हुआ-सा , कुचला इस काले झूठे समाज के बाज़ार में
टूट चुका था, पिघल गया था, तमाम मर्दो के अंहकार में।
लेकिन अहंकार तो मुझे होना चाहिए
मैंने इस संपूर्ण विश्व को जन्म दिया
मेरे से ही तू मर्द बना, मैंने ही तुझे पोषित किया
ऐसा कह सकती थी मैं
लेकिन मैं अहंकारी नहीं हूँ
मैं कही जाती ममता की देवी, मैं ही तो मानवता की जननी हूँ।
परंतु मेरे आत्मसम्मान में प्रिय मुझे अब कुछ नहीं यहाँ
मेरे स्वाभिमान का तमाचा तेरे
उन सभी जुल्मो पर भारी पड़ गया
अब न यह कुचला जाएगा और ना ही होगा इससे समझौता

तुम अपना पतिधर्म निभाओ, मत निभाओ
तुम अपना पुत्रधर्म निभाओ, मत निभाओ
तुम अपना समाजधर्म निभाओ, मत निभाओ
लेकिन मैं अपना स्त्रीधर्म निभाऊंगी
अब मैं स्वयं ही इस समाज से ऊपर उड़ जाऊँगी।
अब मैं स्वयं ही इस समाज से ऊपर उड़ जाऊँगी।

प्रियंवदा शुक्ला
प्रयागराज

शहर समता

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।